शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारतीय समकालीन कला में अमृता शेरगिल का योगदान

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

18

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

शुभम पांडे
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सारांश

कला संस्कृति की वहीका है। भारतीय संस्कृति के विविध आयामों में व्याप्त मानवीय एवं रचनात्मक तत्व उसके कला रूपों में प्रकट हुए हैं। कला का प्राण है रचनात्मकता। रस अथवा आनंद अथवा अस्वाद्य हमें स्थूल से चेतन सत्ता तक एक रूप कर देता है। मानवीय संबंधों और स्थितियों की विविध हा भावलीलाओं और उसके माध्यम से चेतना को कला उजागर करती है। अस्तु चेतना का मूल 'रस' है। वही अस्वाद्य एवं आनंद है, जिसे कल उद्घाटित करती है। भारतीय कला जहां एक और वैज्ञानिक और तकनीक आधार रखती है, वहीं दूसरी और भाव एवं रस का सदैव प्राणतत्वण बनाकर रखती है। भारतीय कला को जानने के लिए उपवेद शास्त्र पुराण और पुरातत्व और प्राचीन साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। समकालीन भारतीय कला में भिन्न–भिन्न समय में भिन्न–भिन्न कलाकारों द्वारा भिन्न–भिन्न शैलियां और मध्यम और तकनीक विकसित हुई। समकालीन कला में महिलाओं का भी योगदान अतुलनीय रहा है। जिसमें अमृता शेरगिल भारत की पहली महिला कलाकार बनी। जिन्होंने समकालीन कला के क्षेत्र में नई उपलब्धियां हासिल करी और अपनी कला में एक अलग पहचान बनाई।

मुख्य बिन्दु

आधुनिकतावादी, आध्यात्मिक, सामाजिक, भारतीय महिला कलाकार।

भारतीय कला को आधुनिकता की ओर मोड़ देने में अमृता शेरगिल ने आरम्भिक मार्गदर्शन का महत्वपूर्ण कार्य किया। अतः उनको आधुनिक भारतीय कला के प्रणेताओं में स्थान दिया जाता है। रवीन्द्रनाथ की कला में भारतीय वैचारिक जीवन की आध्यात्मिकता की अनुभूति है तो अमृता शेरगिल की कला में भारतीय आमान्य जनजीवन की निष्काम. समर्पितवृत्ति का दर्शन है। पारंपरिक और पश्चिमी कला रूपों के सौंदर्यपूर्ण मिश्रण के लिए अक्सर भारत की फ्रीडा काहलो के रूप में संदर्भित, अमृता शेर–गिल भारत के सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक थीं। उन्हें एक क्रांतिकारी महिला

कलाकार और भारत में आधुनिक कला की प्रवर्तक भी माना जाता है। हालाँकि उनके करियर के शुरुआती चरणों में उनकी कलाकृतियाँ मुख्य रूप से पश्चिमी शैली और संस्कृति को दर्शाती थीं, लेकिन चित्रकार ने धीरे–धीरे पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके भारतीय विषयों को चित्रित करके खुद को फिर से खोजना शुरू कर दिया। पेंटिंग के अलावा वह पियानो बजाने में भी पारंगत थीं और पढ़ने की शौकीन थीं। उन्होंने भारत, फ्रांस और तुर्की के विभिन्न हिस्सों की यात्रा भी की और विभिन्न तकनीकों से प्राप्त विचारों को अपने कार्यों में शामिल करने में सफल रहीं। अपने पूरे करियर के दौरान, उन्होंने अपने दोस्तों, प्रेमियों को चित्रित किया और कई आत्म–चित्र भी बनाए, जिसके लिए उन्हें अक्सर कई लोगों द्वारा आत्ममुग्ध व्यक्ति माना जाता है।

अमृता शेरगिल का जन्म 1913 में हुआ। उनके पिता सिख थे व उनकी माता हंगेरियन महिला थीं। बाल्यावस्था में प्रथम आठ वर्ष उन्होंने योरोप में बिताए और 1921 में ही उन्होंने पहली बार भारत का दर्शन किया। अन्तर्राष्ट्रीय मिश्र विवाह का उनकी कला के विकास में अपरिमित लाभ हुआ। उनको अपने भारतीयत्व का उचित अभिमान था। माता के कारण उनका योरोपीय संस्कृति व कला से घनिष्ठ सम्पर्क रहा और वे आधुनिक कला का सत्यार्थ ज्ञात करने में सफल हुईं। अमृता की चित्रकला में अभिरुचि को देखकर माता ने उनको 1929 में पैरिस के एकोल द बोजार में प्रविष्ट कराया। वहाँ के पांच साल के कलाध्ययन से उन्होंने पाश्चात्य अंकन पद्धतियों पर प्रभुत्व प्राप्त किया। तीन साल तक उन्होंने लगातार एकोल द बोजार के प्रथम पुरस्कार प्राप्त किये। 1932 में उनके चित्र प्रांद सलों में प्रदर्शित हुए व एक साल पश्चात् वे उसकी सदस्या चुनी गयीं। केवल कलाविद्यालयीन अध्ययन से वे संतुष्ट नहीं थीं। 1933 व 1934 में उन्होंने पैरिस के संग्रहालयों, कला वीथिकाओं व प्रदर्शनियों में प्राचीन प्रसिद्ध कलाकृतियों एवं आधुनिक कलाकृतियों का परिशीलन किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुंची कि प्राचीन हों या आधुनिक, श्रेष्ठ कलाकृतियां उन्हीं अपरिवर्तनीय मूलाधार तत्वों पर आधारित होती हैं। उन्होंने अपने कलासम्बन्धी विचारों को निम्न शब्दों में व्यक्त किया है श्रेष्ठ कला मे चित्र क्षेत्रीय एवंकिया जाता है। उसमें विषय के आकर्षण का विचार नहीं होता। बाह्य रूप का अनुकरण नहीं किया जाताः उसको आत्मिक बनाया जाता है''। अजन्ता, एलोरा, इजिप्त, चीन, जापान, मध्ययुगीन, योरपीय प्रभाववादी व उत्तरप्रभाववादी कलाओं का चौतन्यपूर्ण व सार्थ आत्मिकीकरण उनको बहुत पसन्द था। रवीन्द्रनाथ के काव्य से उनकी चित्रकला अमष्ता को अधिक हृदयस्पर्शी प्रतीत हुई। प्राचीन शैलियों के अंधानुकरण के लिए उन्होंने 'पुनरुत्थान शैली' के कलाकारों की कटु निंदा की।

1933 के करीब सेजान के अध्ययन से उन्होंने आकारों को सरलीकृत करना शुरू किया जिससे उनकी मानवाकृतियों को स्मारकीय, स्वतंत्र व उदात्त रूप प्राप्त हुआ। सेजान से आरम्भिक प्रेरणा प्राप्त की जाने पर भी गोग्नँ की कला के प्रति अमृता ने अधिक आत्मीयता अनुभव की। गोग्वं स्वयं पाश्चात्य यथार्थवादी कला से पौर्वात्य आलंकारिक प्रतीकवादी शैलियों को पसन्द करते थे और उनका संश्लेषणवाद भारतीय कलादर्शन से घनिष्ठ समानता रखता था। किन्तु इससे भी अधिक जिस गुण के कारण अमृता गोग्वं की कला से प्रभावित हुई थीं वह था प्राचीन प्रतीकवाद का गोग्वं द्वारा परिवर्तित नया स्वाभाविक रूप। अमृता ने अनुभव किया प्राचीन कांगड़ा व बसौली शैलियों का गोरखें के निर्दिष्ट मार्ग से आधुनिकीकरण किया जा सकता है। किन्तु केवल वैचारिक मार्गदर्शन से कार्यसिद्धि होने वाली नहीं थीय गोग्वं की कला को प्रेरणा के अतिरिक्त अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता था। गोग्वँ के उदाहरण से उनको पक्का विश्वास हुआ कि सजीव कला निर्मिति के लिए कलाकार का जीवन से सम्पूर्ण तादात्म्य अनिवार्य है एवं वे भारत आने के लिए तड़पने लगीं।

भारत में, शेर–गिल का पहला प्रयास अपने भारतीय विषयों के लिए उपयुक्त चित्रण का एक तरीका खोजना था। विशेष रूप से पश्चिमी भारत में अजंता गुफाओं की दीवार पेंटिंग से प्रभावित होकर, उन्होंने पेरिस में सीखी गई यूरोपीय तेल चित्रकला तकनीकों के साथ उनके सौंदर्य को जोड़ने का प्रयास किया। उनकी शैली उनके समकालीनों – अवनींद्रनाथ टैगोर, अब्दुर रहमान चुगताई और नंदलाल बोस – से बिल्कुल विपरीत थी, जोबंगाल स्कूल, जिसने भारतीय कला के पहले आधुनिक आंदोलन का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने स्कूल को प्रतिगामी माना और इसे उस ठहराव के लिए जिम्मेदार ठहराया, जो उनके अनुमान के अनुसार, उस समय की भारतीय चित्रकला की विशेषता थी। एक असाधारण रंगकर्मी, शेरगिल उन रंगों के साथ विशेश प्रभाव प्राप्त

करने में सक्षम थी जो बेलगाम और बोल्ड थे, जो उसके समकालीनों के बीच प्रचलित हल्के रंगों के बिल्कुल विपरीत था।

1937 में वह दक्षिण भारत के दौरे पर निकलीं, एक ऐसी यात्रा जिसने उनके भविष्य के सभी कार्यों को आकार और आकार दिया। उस काल की उनकी कृतियाँ, उनकी ''दक्षिण भारतीय त्रयी'' (ब्रह्मचारी, दक्षिण भारतीय ग्रामीण बाजार जा रहे हैं, और दुल्हन का शौचालय), उस समय प्रचलित भारतीय चित्रकला की यथार्थवादी जल रंग विधा से आश्चर्यजनक रूप से भिन्न हैं। वे पेंटिंग्स रूप के साथ उनके प्रयोग का प्रतिनिधित्व करती थीं और अजंता के गुफा चित्रों के साथ–साथ एलोरा के उन पर किए गए जबरदस्त प्रभाव को आत्मसात करने का उनका पहला प्रयास था।

भारत आते ही अमृता ने भारतीय जीवन का जो मुख्यतया श्रमजीवी ग्रामीण जीवन था–निकट से आत्मीयतापूर्ण अध्ययन किया। भारतीय साधारण जनजीवन के उनके चित्रों में 'पहाड़ी स्त्रियाँ', 'भारतीय मां', 'कहानी–कथन', 'बालवधू बहुत ही प्रभावपूर्ण व प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत की यात्रा करके उन्होंने वहां के साधारण लोगों के जीवन को चित्रित किया। इस समय के उनके चित्र 'ब्रह्मचारी', 'वधू का श्रृंगार', 'फल बेचने वाले'' विशेष प्रसिद्ध हैं। दक्षिण भारत की यात्रा में अमृता ने अजंता को पहली बार देखा व उससे वे बहुत प्रभावित हुई। अजंता, मुगल व बसौली शैलियों के अध्ययन से अमृता ने अपनी शैली के विकास में काफी लाभ उठाया किन्तु केवल भारतीय होने के कारण उनका अंधानुकरण करने का वे कड़ा विरोध करतीं। उन्होंने लिखा ''कम से कम एक कारण से मुझे प्रसन्नता है कि मैंन कला की शिक्षा योरोप में पाई। इसने ही मुझे अवसर दिया कि मैं अजंता, मुगल व राजपूत चित्रकारी को समझ सकूं व उन्हें पसन्द कर सकूं। होता यह है कि उसको समझने की अधिकांश भारतीय चित्रकार ढोंग तो करते हैं, लेकिन वास्तव में वह गलत ढंग से समझी जाती है''।

अमृता की कला में न केवल भारतीय सामान्य जनों के सरल निरिच्छ जीवन का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है बल्कि उसमें कला के मूल तत्वों का, आधुनिक कलादर्शन के अनुसार, विकास करके समकालीन भारतीय कलाकारों को मार्गदर्शन किया है। किन्नु उनके अंत तक उनकी कला भारत में कोई समझ नहीं पाये। 1938 में वह हंगरी लौट आईं, जहां उन्होंने अपने चचेरे भाई विक्टर एगन से शादी की। दंपति ने वहां एक साल बिताया और फिर भारत वापस आ गए और आज उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव सराया में बस गए, जहां उनके एक चाचा की संपत्ति थी। हमेशा प्रयोग करने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने प्रेरणा के लिए 17वीं शताब्दी के मुगल लघुचित्रों की ओर रुख किया, उनकी रचना और रंग की भावना को औपचारिक प्रणाली में लागू किया जो उन्होंने अजंता चित्रों से विकसित की थी। 1941 में शेरगिल और उनके पति लाहौर चले गए। जहां 1941 में उनकी निराशावस्था में मष्त्यु हुई, जिस समय उनकी आयु केवल 28 साल की थी।

खूबसूरत और प्रतिभाशाली, अमृता शेरगिल ने अपनी शर्तों पर जीवन जीया, अपने प्रेम संबंधों और अपरंपरागत तरीकों से अपने समय के स्थिर समाज को बदनाम किया। इस आकर्षक जीवनी में, कला इतिहासकार यशोधरा डालमिया ने उस कलाकार का एक सम्मोहक चित्र चित्रित किया है, जब 1941 में अट्ठाईस वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई, तो उन्होंने अपने पीछे बहुत सारा

काम छोड़ दिया जो उन्हें सदी के अग्रणी कलाकारों में से एक के रूप में स्थापित करता है और पूर्व और पश्चिम के बीच संलयन का एक शानदार प्रतीक है।

संदर्भ

1. साखलकर, वी. र. (2014). आधुनिक चित्रकला का इतिहास. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. जुलाई।
2. अध्याय 18. भारत व आधुनिक कला. पृष्ठ **318.**
2. https%//www-researchgate-net/publication/366618975_Amrita_Sher&Gil_The_Modern_Artist-
3. डालमिया, यशोधरा. (2013). Amrita sher gill & A Life, भारत पेंगुइन, जनवरी।
4. https%//sites-smith-edu/global&modern&women&artists/amrita&sher&gil/biography/
5. https%//www-britannica-com/biography/Amrita&Sher&Gil